Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for pg sem 1, CC–3,Unit 1

Topic:–हर्षवर्द्धन और प्रमुख स्त्रोत

सातवीं शताब्दी में उत्तरी भारत का एक शक्तिशाली सम्राट हर्षवर्द्धन हुआ। उसने गुप्तों के पतन के बाद पुनः उत्तर भारत में राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया। हर्षवर्द्धन की प्रशंसा एक साम्राज्य निर्माता, कुशल प्रशासक, धर्म, साहित्य और शिक्षा के संरक्षक के रूप में की जाती है।हर्षवर्द्धन के इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रचुर साहित्यिक एवं अभिलेखीय प्रमाण उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोतों में उसके दरबारी कवि वाणभट्ट का हर्षचरित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन है। वाणभट्ट ने अलंकारपूर्ण शब्दों में प्रभाकरवर्द्धन के व्यक्तित्व, हर्षवर्द्धन के जन्म, उसकी बाल्यावस्था, राज्यश्री का विवाह, प्रभाकरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन और ग्रहवर्मन की मृत्यु, हर्षवर्द्धन के राज्यारोहण, राज्यश्री की खोज एवं अन्य घटनाओं का वर्णन किया है। हर्षचरित राज्यश्री को खोज के साथ ही समाप्त हो जाता है। हर्षचरित में तत्कालीन महत्त्वपूर्ण राज्यों, प्रशासन और हर्ष की धार्मिक प्रवृतियों का भी उल्लेख है। अनेक विद्वान वाणभट्ट के विवरण को सत्य से दूर मानते हैं; परंतु हर्षवर्द्धन का समकालीन होने से उसके विवरण में अलंकरण के साथ-साथ ऐतिहासिकता का भी पुट है। इस ग्रंथ की सबसे बड़ी कमजोरी तिथिक्रम का अभाव है। बाणभट्ट के अन्य ग्रंथ कादम्बरी और पार्वतिपरिणय उतने अधिक महत्व के नहीं है जितना कि हर्षचरित।हर्षवर्द्धन के इतिहास के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत चीनी यात्री हेनसांग का यात्रा विवरण है। ह्वेनसांग एक बौद्ध भिक्षु था। धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह भारत आया था। वह 630 ई० में यहाँ पहुँचा तथा 644 ई तक रहा। उसने हर्षवर्द्धन से भेंट भी की। हर्षवर्द्धन के विषय में, उसके दिग्विजय, प्रशासन, धार्मिक नीति का उल्लेख उसके ग्रंथ शी-यू-की (Records of the Western World) में मिलता है। इस ग्रंथ की रचना उसने चीन वापस पहुँच कर 646 ई० में की। बाद में इस यात्रा विवरण के आधार पर हुईली ने हेनसांग की जीवनी (Life of Hsuan Tsang) लिखी। यद्यपि इसमें हेनसांग द्वारा वर्णित अनेक बातों की पुनरावृति है तथापि अनेक नए तथ्य भी प्रकाश में आते हैं। 671 से 705 ई के बीच इत्सिंग नामक चीनी यात्री भी भारत में रहा। उसने भी अपना विवरण लिखा है। इनके यात्रा-विवरण एवं अन्य चीनी स्रोतों से न सिर्फ हर्षवर्द्धन के शासन पर, बल्कि 7वीं शताब्दी के भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की अत्यंत महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। हर्षवर्द्धन के विषय में कुछ जानकारी हर्षवर्द्धन के नाटकों-रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद से भी मिलती है। परवर्ती साहित्य जैसे, दशकुमारचरित (लेखक दंडिन), अलबेरुनी के तहकीके हिन्द, आर्यमंजुश्रीमूलकल्प से भी हर्षवर्द्धन पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त हर्षवर्द्धन के दो महत्त्वपूर्ण अभिलेख भी उपलब्ध हुए है- मधुबन (आजमगढ़, उत्तरप्रदेश) तथा बांसखेड़ा (शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश) ताम्रपत्र अभिलेख। बांसखेड़ा अभिलेख हर्षसंवत् 22 (628 ई०) तथा मधुबन अभिलेख हर्षसंवत् 25 (631 ई०) का है। इन दोनों अभिलेखों में हर्षवर्द्धन के राज्यकाल की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं और प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। दोनों अभिलेख दान पूरक है जिनमें गाँवों के दान का वर्णन है। हर्षवर्द्धन की दो मुहरे भी नालंदा और सोनपत से मिली है। रविकीर्ति द्वारा रचित चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख भी हर्षवर्द्धन पर प्रकाश डालता है। इसमें पुलकेशिन को हर्ष का विजेता कहा गया है। इस विजय की पुष्टि बाद के निरपन, करनूल और तोगरचेदी अभिलेखों से भी होती है। हर्षवर्द्धन के प्रामाणिक सिक्के उपलब्ध नहीं है।

हर्ष का जन्म 590 ई० में हुआ था। वह प्रभाकरवर्द्धन और यशोमति का पुत्र था। हर्षवर्द्धन अत्यंत विकट परिस्थितियों में गद्दी पर बैठा। वह थानेश्वर के वर्द्धन या पुष्यभूति वंश से संबद्ध था। हर्षवर्द्धन का बड़ा भाई राज्यवर्द्धन था। उसकी बहन राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरी शासक ग्रहवर्मन के साथ हुआ था। प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात राज्यवर्द्धन थानेश्वर की गद्दी पर आया। उसी समय उसे खबर मिली कि बंगाल के शासक शशांक और मालवा के राजा देवगुप्त ने मिलकर कन्नौज पर आक्रमण किया है तथा अहवर्मन की हत्या कर राज्यश्री को कैद कर लिया है। उनकी योजना थानेश्वर पर भी आक्रमण करने की थी। इस दुर्घटना की खबर सुनकर राज्यवर्द्धन कन्नौज की सुरक्षा के लिए आगे बढ़ा। उसने देवगुप्त की सेना को पराजित कर दिया, परंतु शशांक ने धोखे से उसकी हत्या कर दी। राज्यवर्द्धन की हत्या के पश्चात 606 ई० में हर्षवर्द्धन थानेश्वर का राजा बना। राजा बनते ही उसने शशांक और देवगुप्त से बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा अपनी बहन की सुरक्षा के लिए वह कन्नौज की तरफ बढ़ा। मार्ग में उसे कामरूप के राजा भास्करवर्मन का दूत हंसबेग मिला, जिसने हर्षवर्द्धन के समक्ष अपने राजा की तरफ से मित्रता का प्रस्ताव रखा, जिसे हर्ष ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आगे बढ़ने पर उसे भण्डी से सूचना मिली की राज्यश्री कैद से मुक्त होकर विध्याचल चली गई है। अतः, वह कन्नौज का मार्ग छोड़कर विंध्याचल गया। आचार्य दिवाकरमित्र की सहायता से उसने राज्यश्री को उस समय खोज निकाला, जब वह सती होने जा रही थी। हर्ष उसे वापस कन्नौज लाया। ग्रहवर्मन की हत्या के पश्चात उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं होने से, कन्नौज के मंत्रियों एवं राज्यश्री की सहमति से, हर्ष कन्नौज का भी शासक बन गया। उसकी राजधानी अब थानेश्वर से कन्नौज चली आई। इसके साथ ही कनौज अब उत्तरी भारत की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन गया।